International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(6): 105-107

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(6): 105-107
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-09-2017
Accepted: 20-10-2017

Kamini Tiwari
Department of Sanskrit
University of Rajasthan Jaipur, Rajasthan, India

Correspondence
Kamini Tiwari
Department of Sanskrit
University of Rajasthan Jaipur, Rajasthan, India

अथर्ववेद में पृथिवी सूक्त

कामिनी तिवारी

प्रस्तावना

पृथिवी का अर्थ है ''विस्तृत स्थल'' ऋग्वेद में कहा गया है कि इन्द्र ने पृथिवी को फैलाया [1]। तैत्तिरीय संहिता में भी प्रथित या विस्तृत होने से पृथिवी को ''प्रथ'' धातु (फैलाना, विस्तृत करना) से व्युत्पन्न माना गया है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी यही उल्लेख मिलता है। [2] निरुक्तकार आचार्य यास्क ने भी ''प्रथ'' धातु से पृथिवी की फैले हुए अर्थ में व्युत्पत्ति की है। [3] पृथिवी का अधिकतर वर्णन द्यौस् के साथ प्राप्त होता है। पृथिवी की अकेले स्तुति ऋग्वेद के एक तीन मंत्रों [4] वाले सूक्त तथा अथर्ववेद के द्वादश काण्डान्तर्गत आथर्वण ऋषि कृत 63 मंत्रों से समन्वित प्रथम सूक्त में उपलब्ध होती है। [5]

पृथिवी देवी के समस्त गुण भौतिक पृथिवीवत् ही वर्णित मिलते हैं। ऋग्वेद में कहा गया है कि पृथिवी उद्भतों से परिपूर्ण, पर्वतों एवं वन वृक्षों का भार वहन करने वाली क्षमा रूपिणी है। यह मिट्टी को उर्वरा बनाती है, वर्षा को फैलाती है। आकाश की बूंदें इसी के मेघों की विद्युत से आकर वर्षा करती हैं। इसे दयालु माता भूमि कहा गया है। यह महती दृढ़ तथा प्रदीप्त है। द्यौस् के साथ भूमि का वर्णन ''माता'' शब्द का प्रयोग करके किया गया है। अन्त्येष्टि सूक्त में मृतकों से इसी के पास जाने का अनुरोध किया गया है। [6] अथर्ववेदीय भूमि सूक्त भाषा की दृष्टि से अतीव उदात्त, भावप्रवण तथा सरस है। इस सूक्त में भव्य भावुकता एवं भावनाओं के साथ मातृरूपिणी पृथिवी की समस्त जड़ चेतन की जननी एवं पोषिका के रूप में स्तुति की गई है। इससे प्रजा को समस्त दोषों, क्लेशों, अनर्थों से मुक्त कराने तथा सुख समृद्धि प्रदान करने के लिए याचना तथा प्रार्थनाएं की गई हैं।

अथर्ववेद में पृथिवी (मातृभूमि) हमारे समक्ष सम्पूर्ण मातृत्व के रूप में प्रस्तुत हुई है। वहां कहा गया है कि मेरी माता मातृभूमि है और मैं उसका पुत्र हूं। [7] वह हमारी माता (मातृभूमि) मुझ पुत्र के लिए दूध दे। [8] ऋग्वेद में कहा गया है कि मातृभूमि को माता मानने वाले ही सच्चे कुलीन हैं। उनमें कोई छोटा–बड़ा नहीं है। [9] मातृभूमि, मातृभाषा और मातृसंस्कृति ये तीनों माता के समान सुख देने वाली हैं। [10] अथर्ववेद के भूमि सूक्त का प्रत्येक मन्त्र मातृत्व की ममता से लबालब भरा है। हे मां भूमि मुझे कल्याण अवस्था से युक्त करे। [11] वह मां भूमि हमें अपूर्व देय प्रदान करे। [12] दूध, गाय, अन्न, हमारी इच्छानुसार धन देकर हमारा सम्वर्धन करे। [13] हमारे शत्रुओं को दूर कर हमें शत्रुओं से निर्मुक्त करे। [14] भौतिक जगत में माता का जो मातृत्व दृष्टिगोचर होता है। उसकी स्पष्ट झलक हमें अथर्ववेदीय इस पृथिवी सूक्त में मातृभूमि के विषय में मिलती है। हमें मातृभूमि की रक्षा के लिए समय पड़ने पर तैयार रहना चाहिए तथा तेजस्वी और पराक्रमी बन कर इसका उपभोग करना चाहिए। [15] इन मंत्रों में पृथिवी के साथ मातृत्व, आत्मीयता तथा तादात्म्य का भाव प्रकट होता है।

अथर्ववेद में कहा गया है कि पृथिवी पहले समुद्र के गर्भ (हृदय) में थी। जिसके बाहर भीतर परमेश्वर व्याप्त है, जो आकाश के अधर में है, अर्थात् पृथिवी का केन्द्र बिन्दु आकाश में है। जिससे यह शक्ति प्राप्त करती है। [16] आचार्य मनु ने भी जल से गन्ध गुण सम्पन्न पृथिवी की उत्पत्ति कही है। [17] एक मंत्र से यह भी विदित होता है कि पृथिवी अन्तरिक्ष में रहते हुए अपने पिता (सूर्य) की परिक्रमा करती है। मंत्र में कहा गया है कि वह अपनी माता (अन्तरिक्ष) के समक्ष रहते हुए अपने पिता (सूर्य) की ओर गमन करती है। [18] एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि यह पृथिवी कांपती हुई चलती है। इससे पृथिवी का सूर्य के चारों ओर लट्टू के समान परिक्रमा करने का अभिप्राय प्रकट होता है। जिस प्रकार मेघों में अग्नि (बिजली) है उसी प्रकार पृथिवी में भी अग्नियां हैं। [19] पृथिवी ऋत (शाश्वत प्राकृतिक) नियमों की पत्नी (पालन करने वाली) है। पृथिवी जब आगे की ओर प्रथित हुई तो देवों ने इसका नाम पृथिवी रख दिया। [20]

अथर्ववेदीय भूमि सूक्त में पृथिवी पर बसे, ग्राम, नगर, जनपद, पर्वत, नदी, सागर समस्त चेतन एवं अचेतन समाज का भव्य वर्णन किया गया है। यह भूमि सम्पूर्ण जड़ चेतन जगत् का अधिष्ठान है। यह पृथिवी बहुत से नतोन्नत एवं समतल स्थलों से युक्त विविध वीर्यवती औषधियों को धारण करती है।

इसमें समुद्र एवं सिन्धु (नदी) जल, अन्न, कृषि और सकल प्राणवान गतिशील प्राणीवर्ग सक्रिय हैं। यह भूमि हमारे लिए समस्त पेयों से उपलक्षित सारे उपभोग्य पदार्थों को धारण करती है। [21] इसकी चार प्रदिशाएँ हैं। [22] इस पृथिवी पर प्राचीन जनों ने पहले युद्ध किया। देवों ने दानवों पर आक्रमण किया। यह गायों, अश्वों, पक्षियों की विशिष्ट आवास स्थली, तेज तथा ऐश्वर्य को धारण करती है। [23]

यह विश्वंभरा, धन निधि, दृढ़स्थितिस्थल, हिरण्यवक्षा (सुवर्ण से युक्त) सम्पूर्ण सम्पत्तियों से परिपूर्ण, जगद् की आश्रय स्थली तथा वैश्वानर अग्नियों को धारण करती है। [24] देवता सदैव इसकी अप्रमादपूर्वक रक्षा करते हैं। यह अपने प्राणियों को मधु तेज प्रदान करती है। [25] भूमि नित्य चलन धर्म जलों की आधार स्थली है। इसे अश्विनी कुमारों ने मापा [26], विष्णु ने इस [27] पर विक्रमण किया और इन्द्र ने इसे शत्रुहीन किया। [28] यह अपने पुत्रों को दुग्ध प्रदान करती है। यह गिरी, हिमवान् पर्वत और वन अविजित, अहत, अक्षत भूरे रंगवाली, कृष्णवर्ण, रक्तवर्णा सम्पूर्ण रूपों वाली अर्थात् विविध वर्णों की मिट्टी से युक्त तथा इन्द्र द्वारा रक्षित महती पृथिवी पर स्थित हैं। पृथिवी के गर्भ में जो ऊर्जाएँ हैं वे हम सबमें स्थापित है। भूमि हमारी माता है और प्रजन्य हमारा पिता है। ऋग्वेद में भी पर्जन्य को पिता रूप में माना गया है। यह रेतस् से पृथिवी की रक्षा करते हैं। [29]

इस भूमि पर देवताओं ने अपने सृष्टि रूप यज्ञ का विस्तार किया। इस पर अब भी यज्ञकर्ता जन वेदि का परिग्रह करते हैं। [30] सारे मरण धर्मा प्राणी भूमि से ही उत्पन्न होते हैं और इसी पर विचरण करते हैं। यह द्विपाद चतुष्पाद सभी प्राणियों की जननी है। पृथिवी के ऊपर जो पांच मानव (पंचजनाः) हैं वह भी तुम्हारे ही हैं। सूर्य इनकी इस धरा पर अमृतज्योतियों को सर्वत्र प्रसारित करता है। [31] यह भूमि वसुमती, औषधियों की जननी, दृढ़, धर्म द्वारा धृत मंगलकारिणी, सुखदायिनी है। [32] इसका वेग, दीप्ति, कम्पन (सूर्य के चारों ओर घूमना) महान है। [33] इसके अन्न तथा पेय से ही सारे मर्त्य जीवन धारण करते हैं। यह दीर्घायुष्य प्रदान करने वाली और सर्वसुखदात्री है। [34] भूमि में अग्नि है। [35] पृथिवी में गन्ध है। यह तथ्य तत्रगन्धवती पृथिवी इस दार्शनिक तथ्य का मूल बीज है। इस गन्ध को औषधियाँ, जल, गन्धर्व और अप्सराएँ धारण करती हैं। पृथिवी की यही गन्ध कमलों, देवताओं, पुरुषों, स्त्रियों, अश्वों, मृगों, हाथियों और कन्याओं में तेज रूप में स्थित है। [36] इस पर शिला, भूमि, पत्थर, धूलि और छोटे–बड़े वृक्ष दृढ़ता से स्थित हैं। [37]

यह पृथिवी ब्रह्मा द्वारा वृद्धि को प्राप्त करती है। [38] सारे प्राणी इसी पर उठते–बैठते और चलते–फिरते स्थित हैं। [39] पृथिवी में जलशोधन की शक्ति है। इसमें चार दिशाएँ हैं और यही सबके लिए सुखद शय्या है। [40] इस धरा पर ही ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, वसन्त ऋतुएं नियमित रूप से आवागमन करतीं हैं। [41] यह अपने आप को इन्द्र के लिए धारण करती है और शत्रुओं को विनष्ट करती है। [42] यही मानवों और देवों की यज्ञ स्थली है। इसी पद सदस् (सोमस्थान) हविर्धान एवं यूपों की स्थापना की जाती है और चारों ऋत्विज् वेदों द्वारा यज्ञ करते हैं। [43] इसी धरा पर मर्त्य नाचते, गाते और युद्ध करते हैं। यहीं पर युद्ध का क्रन्दन होता है, और दुन्दुभी बजती है। [44] पृथिवी पर ही पंचविधजनों के लिए अन्न, धन, जौं आदि की खेती होती है। [45] इसके दुर्ग (पुर, गांव, नगर, जनपद) देवों द्वारा निर्मित हैं तथा यह गहन स्थानों पर विभिन्न धनों को धारण करती है। [46]

इस भूमि पर विभिन्न धर्मों, वर्णों एवं भाषाओं के लोग निवास करते हैं। [47] इस भूमि पर तीक्ष्ण दंश करने वाले जो हेमन्त ऋतु में नष्ट हो जाते हैं। ऐसे जीव तथा भ्रमण करने वाले, गुफाओं में रहने वाले, सर्प, वृश्चिक, कृमि, प्रसन्न होकर शब्द करने वाले और सरकने वाले जीव निवास करते हैं। [48] इस पर मनुष्यों के गमन मार्ग वाहनों (मोटर गाड़ियों) के मार्ग हैं। जिन मार्गों से भद्र तथा पादी दोनों प्रकार के लोग आवागमन करते हैं। यही धरा मलिन बुद्धि वालों, तथा मलिन और भारी वस्तुओं, भद्रजनों, पापीजनों को धारण कर उनकी मृत्यु को सहन करती है। यही सूकर, मृगादि जीवों को धारण करती है। [49] इसी पर विचरण करने वाले, वनों में रहने वाले, नरभक्षक, सिंह, व्याघ्र, ऋक्ष, राक्षस आदि जीव रहते हैं। दुर्भाग्य संकट हानि इत्यादि प्राकृतिक आपदाएं आती हैं। उनसे यह भूमि पुरुषों को मुक्त करे। [50] मातरिश्वा (वायु) धूलियों को इधर–उधर उड़ाता है, वृक्षों को गिराता है। अग्नि की लपट वायु का इधर उधर अनुसरण करती है। [51]

इसी धरा पर गन्धर्व, अप्सराएं और शत्रुतापूर्ण शक्तियां स्थित हैं। [52] पृथिवी पर दो पैर वाले हंस, सुपर्ण तथा शकुनी पक्षी एकत्रित होकर उड़ते हैं। यहां कृष्ण और शुक्ल वर्ण (अरुण) अहोरात्र उभय कृष्ण शुक्ल पक्ष युक्त मास होते हैं। [53] मानवों को यह विस्तृत स्थल द्यौ, पृथिवी और अन्तरिक्ष ने प्रदान किया। अग्नि जल तथा सब देवों ने जो इस पृथिवी पर विराजमान हैं मेधा प्रदान की। [54] देवताओं ने प्रथम क्रिया से इसका अभिधान पृथिवी रखा और उसी समय इसने चारों दिशाओं की रचना की। [55] इस भूमि पर ग्राम और अरण्य हैं। यहीं सभाएं, संग्राम और समितियां होती हैं। [56] देवताओं ने मनुष्यों को जन्म देकर धरा पर विकर्ण किया। यह पृथिवी रमणीय, अग्रगामिनी, भुवन की रक्षा करने वाली और वनस्पतियों तथा औषधियों को धारण करने वाली है। [57] पृथिवी का उत्संग रोग रहित, यक्ष्माविहीन, दीर्घायुष्यदायक तथा प्रतिबोधयुक्त है। [58] यह शान्त, सुरभित, सुखकारी, अमृत से परिपूर्ण रत्नों वाली, पयस्वती हमसब को आशीर्वाद प्रदान करें। [59]

संधर्व सूची

1. ऋग् 2/15/2
2. साऽप्रथत् सा प्रथिव्यभवत्तत् पृथिव्यै पृथिवित्वम्। तै.सं. 7/1/5/1 यद प्रथयत्तत्पृथिव्यै पृथिव्यै पृथिवित्वम् 1/1/3/5 तै.बा.
3. प्रथनात् पृथिवीत्याहुः। निरुक्त पृ. 34 ''मकुन्द झा वक्सी''
4. ऋग् 5/84
5. अथर्व 12/1/1 से 63 तक
6. ऋग् 10/18/10
7. माता भूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्याः। अथर्व 12/1/12
8. अथर्व 12/1/10
9. ऋग् 1/13/9
10. अथर्व. भूमे माता निर्धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्। अथर्व. 12/1/63
11. अथर्व. 12/1/13
12. अथर्व. 12/1/19, 12/1/4, 12/1/40, 12/1/13
13. अथर्व. 12/1/41
14. अथर्व. 12/1/62, 12/1/11
15. अथर्व 12/1/8
16. वि मनु. (अद्भयः गन्धगुणा भूमिः) 1/47
17. अथर्व. 6/31/1 यजु. 3/6
18. अथर्व. 12/1/37
19. अथर्व. 7/6/2
20. अथर्व. 12/1/17
21. अदोयत् देवि प्रथमाना पुरस्तात् दैवेरुक्त। अथर्व. 12/1/55
22. अथर्व. 12/2/3, 4
23. अथर्व. 12/1/4
24. अथर्व. 12/1/6
25. अथर्व. 12/1/7
26. अथर्व. 12/1/8
27. अथर्व. 12/1/10, ऋग् 24/5/6, 3/58/8, 1/44/5
28. ऋग् 1/154/1
29. ऋग् 7/68/8
30. असुरः पिता नः। ऋग् 5/83/6
31. अथर्व. 12/1/13 ऋग् 10/90/6, 7
32. अथर्व. 1/12/17
33. अथर्व. 12/1/17

34. अथर्व. 12/1/18
35. अथर्व. 12/1/23
36. अथर्व. 12/1/20, 21
37. अथर्व. 12/1/24, 12/1/1, 2, 10/3/20
38. अथर्व. 12/1/26, 27
39. अथर्व. 12/1/29
40. अथर्व. 12/1/31
41. अथर्व. 12/1/30 से 33 तक
42. अथर्व. 12/1/36
43. अथर्व. 12/1/37
44. अथर्व. 12/1/38
45. अथर्व. 12/1/42
46. अथर्व. 12/1/43
47. अथर्व. 12/1/44, 45
48. अथर्व. 12/1/46
49. अथर्व. 12/1/47
50. अथर्व. 12/1/48
51. अथर्व. 12/1/49
52. अथर्व. 12/1/50
53. अथर्व. 12/1/51
54. अथर्व. 12/1/52
55. अथर्व. 12/1/53
56. अथर्व. 12/1/55
57. अथर्व. 12/1/56
58. अथर्व. 12/1/57
59. अथर्व. 12/1/58